DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P college, Barachakia
BRABU — Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Subject — Sanskrit
Paper — I

5 X 3 = 15 Marks

कारक सूत्र - व्याख्या

(चतुर्थी विभक्ति)

20. ~~कुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां~~ कुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः (1/4/37)

कुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या यानी जलन करना), तथा असूय (निन्दा) — इन धातुओं और इनके अर्थवाले अन्य धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप किया जाता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है। जैसे — हरये क्रुध्यति (हरि पर क्रोध करता है), दुष्टः सज्जनाय द्रुह्यति (दुष्ट सज्जन से द्रोह करता है), मोहनः रमेशाय ईर्ष्यति (मोहन रमेश से ईर्ष्या करता है), ~~मोहनाय~~ असूयति (हरि से असूया करता है) — इन चारों उदाहरणों में क्रमशः कुध्, द्रुह्, ईर्ष्य् एवं असूय् — इन मूल धातुओं का ही प्रयोग है, अतः कोप, द्रोह, ईर्ष्या एवं असूया के विषय हरि, सज्जन, रमेश एवं मोहन की उक्त सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा हुई है और इनमें चतुर्थी विभक्ति हुई है। अब प्रश्न होता है कि 'यं प्रति कोपः' ऐसा क्यों कहा? उत्तर है — न कहने पर 'भार्यामीर्ष्यति मैनामन्योऽद्राक्षीत्' (भार्या के विषय में ईर्ष्या करता है ताकि इसका अन्य न देख ले) — इस वाक्य में उक्त सूत्र से भार्या की सम्प्रदान संज्ञा हो जायेगी। जबकि यहाँ ईर्ष्यति में कोप की भावना न होकर असहिष्णुता की भावना है।

— ० —

क्रमशः जारी